SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

EDUINDEX

PUBLICATION CERTIFICATE

This publication certificate has been issued to

डॉ. सुधीर गणेशराव बाघ

For publication of research paper titled

हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी जीवन का चित्रण

Published in

Drishtikon with ISSN 0975-119X

Vol: *12* **issue:** *9* **Month:** *June* **Year:** *2020*

Impact factor: *5.6*

The journal is indexed, peer reviewed and listed in UGC Care

Editor

Editor

www.eduindex.org
editor@eduindex.org

Note: This eCertificate is valid with published papers and the paper must be available online at the website under the network of EDUindex.

T.C.
Assistant Professor
Tq.& Dist.Hingoli.(MS.)

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

Drishtikon
(UGC Care Journal)
051 050 ISSN 0975-119X Vol-12-Issue-09 June-2020 046

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी जीवन का चित्रण

डॉ. सुधीर गणेशराव यादव
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभागाध्यक्ष
शिवाजी महाविद्यालय,हिंगोली, महाराष्ट्र

शोध सार- हिन्दी के आदिवासी जीवन संबंधी उपन्यासकारों ने समसामायिक हिंदी भाषा, भारतीय ग्रामीण एवं आदिवासी समाज के विविध पक्षों को अपनी लेखनी से साहित्य में प्रतिबिम्बित कर उनके वर्तमान जीवन के सांस्कृतिक इतिहास का निर्माण कार्य किया है | इन उपन्यासकारों ने अपने परिवेश की जनता की आस्थाओं, जीवन पध्दतियों, कार्य प्रणालीयों, संस्थाओं, वैचारिक संगतियों एवं विसंगतियों, मान्यताओं एवं लोक संस्कृति आदि की मृतिका से अपने साहित्य का निर्माण कर उसे आगामी मानवता के लिए वर्तमान, ग्रामीण एवं आदिवासी जनता के जीवन का स्मारक स्तम्भ बना दिया है |

मुख्य शब्द - आदिवासी जीवन से जुडी समस्याएँ, संघर्ष, स्वतंत्रता, स्वावलंबन, आस्मिता, संस्कृति आदि

आदिकाल से पहाडों और जंगलों में निवास करनेवाले लोगों को आदिवासी कहा जाता है। आदिवासी सहीं अर्थों में मूल निवासी है। भारतीय संविधान में आदिवासीयों को अनुसुचित जनजाति कहा जाता है। आदिवासी विमर्श वर्तमान काल की संकल्पना है। यह आधुनिक युग का विचार मंथन है। भारत में आदिवासी जंगलों तथा पहाडी प्रदेशों में रहते है। आज भारत के आर्थिक विकास के पथ पर तेज गति से आगे बढता जा रहा है | भारत के हर हिस्से और वर्ग के चेहरे पर विकास की झलक देखी जा सकती है | इस सबके बावजूद आज भी समाज का एक वर्ग ऐसा हे जो हजारों साल पुरानी अपनी परंपराओं के साथ जी रहा है | भारत के आदिवासी आज भी जंगली परिस्थितीयों में किसी तरह से अपना जीवन यापन कर रहे है | संख्या में आदिवासी काफी है लेकिन विकास की बौच्छार उन तक नहीं पहुंच पा रही है|

Copyright©authors

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

Drishtikon
(UGC Care Journal)
ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-09
June-2020

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

हिन्दी का उपन्यास साहित्य सदैवसे संपन्न रहा है। हर युग की परिस्थितियों का चित्रण उपन्यासों में किया हुवा है। उपन्यास आधुनिक काल की सर्वाधिक शक्तिशाली एवं लोकप्रिय विधा है, है, जो निरन्तर विकसनशील है | उपन्यास का उद्देश्य मनोरंजन के साथ-साथ मानव जीवन के विविध रूपों को बताना भी है।[1] हिंदी के आदिवासी उपन्यास अन्य साहित्य से भिन्न रहते है | उपन्यासकारों ने वर्तमान समय में जीते हुए आदिवासीयों के समग्र पहलूओं को उद्घाटित किया है | हिंदी के उपन्यसाकारों ने उपन्यास साहित्य के लिए वन, जंगल, पहाडो, और पहाडो की खोंहों मे बसनवाले आदिवासी जीवन को खोज निकाला है | इन्ही में से कुछ आदिवासी उपन्यास निम्न प्रकार से देखे जा सकता है -

कचनार (1947) : वृंदावन लाल वर्मा लिखीत इस उपन्यास में गोंडों अथवा राजगोंडों के रहन-सहन, रीति-रिवाज आदि का परिचय दिया गया है | इसमें एक आदिवासी साधारण गोंड नारी कचनार ने अपने सतत संघर्षशील एवं व्यथाजनित वातावरण में जों दृढता, स्वच्छता एवं वैयक्ति महत्ता का परिचय दिया है और दुर्व्यसनग्रस्त गुसाइयों के मध्य गुसाई बनकर अपने सतीत्व की रक्षा की है, ये सभी बातें नारी जाति की विलक्षण शक्ति और अपूर्व साहस की परिचायक है | सारी कथा का केन्द्र कचनार ही है | इसमें वर्मा जी ने ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर एक सत्य घटना को आधार बनाते हुए चोट लगने के पश्चात तथा चोट-पर-चोट लगने के बाद दलीपसिंह की मानसिक स्थिती का विश्लेषण किया है और कचनार तथा दलीप सिंह के आदर्श प्रेम को व्यंजित किया है | इसमें मुख्य चरित्र दो ही है - दलीप सिंह और कचनार | कचनार अपुर्व सुन्दरी है | यद्यपि वह दलीपसिंह को उसकी शादी में कलावती पत्नी के साथ दासी के रुप में प्राप्त होती है, परन्तु वह हृदय हृदय से दलीप से प्रेम करती है | वह अस्त्र-शस्त्र चलाना भी जानती है | उसकी चारित्रिक भव्यता एवं वैयक्तिक दिव्यता का मनोहर चित्रण वहाँ मिलता है |

वनलक्ष्मी (1956) : योगेन्द्रनाथ सिन्हा का उपन्यास है | इसमें बिहार की आदिवासी जाति पर आधारित वनलक्ष्मी उपन्यास है | धर्मांतरण की प्रवृत्ति को केन्द्र में रखकर लिखा गया आदिवासी जीवन केंन्द्रित उपन्यास है | प्रस्तुत उपन्यास में आदिवासी कन्या बुदनी ईसाई धर्म के जेफरन के प्यार में फँस जाती है तो इससे उसके माता-पिता तथा बुदनी का हो उसके माता-पिता को एवं उनकी आदिवासी जाति को पर्याप्त हरजाना देने पर मामला दब जाता है |

अत: उल्लिखित उपन्यास में बिहार की आदिवासी जाति के उत्सव, धर्म, समाज, समाज के रीति रिवाज, रुढि, परम्पराएँ आदि का विस्तार से अध्ययन प्रस्तुत हुआ है |

Copyright©authors

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-09
June-2020

अरण्य (1973) यह हिमांशु जोशी का उपन्यास है | इसमें कूमांचल के उदास घरों में बसने वाले आदिवासियों के मलीन चेहरों एवं उदास आँखो की व्यथा - कथा है | अनाथ कावेरी अपने मामा माधव प्रधान के यहाँ रहकर एक खामोशीभरी जिन्दगी जीती है | हिरदे राम का बिगडैल बेटा मानिक अपने दुर्व्यसनों में भी उसकी सहानुभूति पाता है | एक दिन मानिक अपने अपराध के लिए कावेरी से तिरस्कृत होकर गाँव छोडकर भाग जाता है | बाद में कावेरी की शादी बूढे ठेकेदार के साथ हो जाती है | मानिक, कावेरी के विवाह के बाद फौजी बन गाँव लौटता है | मानिक कावेरी की सोयी पीडा जगाकर वापर फौज में चला जाता है | वह कावेरी की सहायता करता है और एक दिन युध्द में शहीद हो जाता है | कावेरी का पति भी आत्महत्या कर लेता है | कावेरी उपन्यास के अंत तक मानिक की प्रतीक्षा करती है |

कगार की आग (1978) : हिमांशु जोशी का यह पर्वतीय आदिवासी जीवन पर आधारित लघु उपन्यास है | इसमें अंचलीय परिवेश तो है लेकिन सही अर्थों में यह अँचल जीवन पर लिखा गया उपन्यास न होकर पारिवारिक यथार्थ का उपन्यास लगता है | परिवार कें केन्द्र में पहाडी गोमती नामक एक स्त्री है जो परिवार और भ्रष्ट सामाजिक तत्वों से पीडित होती है | वास्तव में गोमती बहुत दुर तक पहाडी नारी की पारिवारिक और सामाजिक यातना का प्रतिनिधित्व करती है किन्तु यह भी कहा जा सकता है कि काफी दूर तक उसे अपनी नियतिने अकेला बना दिया गया है | लगता है कि अधिक करुणा उपजाने के लिए उसे अनेक प्रकार की यातनाओं से सायास जोड दिया गया है, उसकी प्रतिकुल परिस्थितीयों और पात्रों को कहीं भी गहराई से उभारता है किन्तु कोई नई सामाजिक भूमिका नहीं निर्मित कर पाता | गोमती के अन्त में उभरा हुआ आक्रोश भी व्यक्तिगत धरातल का आक्रोश बनकर रह जाता है |

पिंजरे में पन्ना (1981) : मणि मधुकर का यह लघु उपन्यास है | रेगिस्तान जिसकी जन्मभूमि है ऐसे गाडिया लुहार और उनके द्वारा निर्मित कला को प्रस्तुत उपन्यास में विशेष स्थान स्थान दिया है | आदिवासियों में स्थित इन जातियों की अपनी निजी पहचान, मूल्य, परंपरा, रीति-रिवाज और संस्कृति है | आधुनिकता से यह जीवन पुर्णतः बेखबर है | प्रस्तुत उपन्यास में मुख्यतः तीन कथाओं का समावेश किया गया है | गाडिया लुहार, ख्याल की नायिका पन्ना और नंदेरम्या की लोककला की गवेषणा यह तीन कहानियाँ समांतर चलती है | तीनों कथाओं के माध्यम से रेगिस्तान का संघर्षमय जीवन, यायावर समाज की समस्याएँ एवं वहाँ के लोगों की लोक संस्कृति को वाणी दी है | आदिवासी गाडिया लुहारों की कथा से यायावर जीवन पन्ना की कथा के यायावर

Copyright©authors

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

जाति की कला प्रदर्शनी एवं लोकला की झाँकी साथ में, नारी शोषण की हृदय द्रावक स्थिति एवं नंदरुआ की कथा से लोककला के उत्स की गवेषणा का अंकन हुआ है | उपन्यास में कहीं - कहीं शोषण और अन्याय के प्रति चेतना भी पाई जाती है | मूलतः प्रस्तुत उपन्यास लोक जीवन एवं लोक संस्कृति को केन्द्र में रखकर यायावर गाडिया लुहार जाति का जीवंत दस्तावेज बनता है |

जंगल के आस-पास (1982) : यह राकेश वत्स का उपन्यास है | जंगल के आस-पास दमकडी के आदिवासियों के जीवन को केन्द्र में रखकर लिखा गया एक सशक्त आंचलिक उपन्यास है है | इसमें सोन नदी के किनारे फैले जंगल और पहाडियों में बसे दमकडी अँचल के पिछडे और शोषित आदिवासियों का आधुनिक सभ्यता से अलग एवम् अभिशप्त जीवन चित्रित हुआ है | आतंक, आतंक, अन्याय, पूंजीपतियों द्वारा किया जाने वाला अमानुष शोषण, जंगली जानवरों की समस्या, अभाव और नई चेतना कथा के महत्त्वपुर्ण बिन्दु है |

उपन्यास का कथानक दमकडी अंचल और वहाँ के आदिवासीयों से संबधित है | राय साहब दमकडी के अकेले बेताज बादशाह हैं | कानुनन जमींदारी उन्मुलन हो गया लेकीन आज भी उनके ठाठ एक राजा की तरह हैं | युगीन परिवेश में अपनी सत्ता कायम बनाय रखने हेतु षडयंत्र से राजनिती में प्रवेश करके विधायक बन जाता हैं | पुलिस स्टेशन अदालत सभी उन्ही के इशारे पर चलते हैं | दमकडी का सारा इलका पुँजीपती महाजन, पुलीस और नेताओं से अत्यधिक आतंकित है | उपन्यास में ओझा का पात्र भी अमानुष का प्रतीक बनकर प्रवेश करता है | ओझा और राय साहब की मर्जी के खिलाफ बहुत कम लोग हैं जो कदम उठाने का साहस करते हैं | यदि करें तो उसके साथ अमानुष व्यवहार किया जाता हैं | एक तरफ दमकडी के आदिवासियों का उच्च वर्ग के व्दारा शोषण निरुपित हुआ है तो दुसरी तरफ वहाँ का प्राकृतिक परिवेश भी चित्रित हुआ है | जंगल एवं पहाडों से घिरे दमकडी अंचल का प्राकृतिक परिवेश अत्यंत जटिल एवं कठिन है | पिछडे और अछुते आदिवासी क्षेत्र का आतंक, शोषण, पिछडापन अभाव अदि उपन्यास के मुल तथ्य है |

महर ठाकुरों का गाँव (1984) उपन्यासकार बटरोही का यह आदिवसी जीवन केन्द्रीत उपन्यास है | कथा भूमि के केन्द्र में अल्मोडा जिले का सीरगाड नामक पहाडी अच्छुता अंचल है | जहाँ महर ठाकुरों की बस्ती है | नई सभ्यता एवं संसार से कटी इस आदिवासी जाति का अभिशप्त जीवन पुर्णतः पृथक हैं | अपने आस पास की दुनिया ही उनका संसार से है | धर्म के जाल मे फँसे लोगों की करुण कहानी को उपन्यास वाणी देता हैं | कथा का प्रारंभ हरदा नामक युवक के सीरगाड अंचल में आगमन से होता है | चौदह साल की अवस्था में गाँव से बनारस जाकर धम्र ग्रन्थ और

Copyright©authors

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI
ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-09
June-2020

विधि का अध्ययन कर शास्त्री बनकर आता है | गाँव में व्याप्त अज्ञान, अंधविश्वास, रुग्ण परंपराएँ, परंपराएँ, पंडितों के प्रति अंधी आस्था उनके द्वारा किया जाने वाला शोषण, भूत-प्रेत की मान्यताएँ, छूआछूत, धार्मिक आडम्बर आदि का जमकर विरोध करता है | गाँव के पाणेज्यू, दलीपसिंह प्रधान आदि को हरदा के काम अखरते हैं | क्योंकि वे चाहते नहीं कि गाँव का विकास हो | अपनी सत्ता बनाए रखने के लिए वे भोले-भाले गरीब लोगों को दबाए रखते है | अत: संपुर्ण गाँव हरदा के विरोध में खडा होता है किन्तु हरदा टस से मस नहीं होता | वह गाँव के लिए रचनात्मक कार्य करता है | लोगों को शिक्षा, अधिकार, वैज्ञानिकता, रुग्ण परंपराओं का नए सिरे से अध्ययन कराके नई मानसिकता तैयार करता है | अत: हरदा के अथक, संघर्षशील प्रयत्नों से संपुर्ण गाँव उपयुक्त दर्जा समस्याओं से मुक्त होता है |

वन, पहाड, नदियों, घाटियों की खोहों में जीवन यापन करनेवाली आदिवासी जातियों में बिहार की कुछेक आदिवासी जातियाँ भिन्न भिन्न दृष्टिगत होती है |

वनतरी (1986) : यह सुरेशकुमार श्रीवास्तव का विशुध्द आदिवासी जीवन केंन्द्रित उपन्यास है | जिसकी कथाभूमि बिहार राज्य के होयहात प्रखंड की डुमरी अंचल है | डुमरी अंचल में भुइयां, तुरी महरा, महतो आदि आदिवासी बसते है | किंन्तु प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने केवल परहिया आदिवासी जीवन को केन्द्र में रखा है | वन, पहाड, नदियों की खोह में जीवनयापन करने वाली और जंगल पर निर्भर इस आदिवासी जाति का जीवन अन्य आदिवासी जातियों से बिल्कुल पथक है | उपन्यास का शीर्षक चरित्र प्रधान होने की आशंका उत्पन्न करता है किन्तु यह मात्र बनतरी का कहानी न के बिरादरी की कहानी है | उपन्यास में कथानक का पुर्णत: अभाव है | इसमें परहिया आदिवासी जीवन का पिछडापन, अभाव ग्रसतता, प्राकृतिक परिवेश, शोषण और व्यवस्थागत विसंगतियों का यथार्थ लेखा-जोखा प्रस्तुत हुआ है | साथ में, मिथिल वनतरी की प्रेम कहानी भी उपन्यास की मूल कथा में अपना स्थान रखती है |

बुध्दू परहिया के घर जन्मी वनतरी के जीवन के साथ कटते जंगल एवं लुप्त होती परहिया आदिवासी जाति के प्रति संवेदना और जीवन संघर्ष को वाणी प्रदान करना उपन्यासकार का लक्ष्य रहा है | सिस्टर मरियम्मा की सहायता से वनतरी हाई स्कूल तक की पढाई पुर्ण करती है | वनतरी पढी-लिखी होने के कारण उसमें अधिकार बोध एवं चेतना संक्रमित होती है | अपनी आदिवासी जाति के लिए अन्याय एवम् शोषण का डटकर विरोध करती है | ठाकुर परमजीत सिंह गाँव के जमीनदार है | जमींदारी टूटने के बावजूद भी वे पूरी तरह से अपनी सत्ता और स्थान कायम बनाए

Copyright©authors

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI
ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-09
June-2020

हूए हैं | अपनी राजनीति का प्रयोग करके बडे-बडे अधिकारियों से हाथ मिलाकर सामान्य गरीब गाँव की भोली-भाली जनता को लूटते हैं | उनमें मानवीय संवेदना का अभाव है | वनतरी इन सारी समस्याओं का सामना करती इनका हल खोजती है | वस्तुत उपन्यास में उपन्यासकार ने वनतरी के माध्यम से एक आदिवासी युवती के विद्रोह को व्यापक फलक पर चित्रित किया है |

'धार'(1990) संजिव जी का 'धार' उपन्यास आदिवासी जीवन की गरीमा तथा उपलब्धियों को उजागर करता है। धार उपन्यासों में श्रमजीवी मजदुर आदिवासीयों की व्यथा का चित्रण किया गया है। उपन्यास के केंद्र में संथाल परगना का बाँसगडा, उँचल और आदिवासी समाज है। पूंजीवादी व्यवस्था, बिचौलियों की कुटिलताऐं,अवैध खनन, माफिया गिरोह का आतंक,राष्ट्रीय संपत्ती की लूट, श्रमजीवीयों का शोषण, आदिवासी जीवन और व्यवस्थागत विसंगतियों का यथार्थ वर्णन किया गया है।

'पाँव तले की दूब' 1995 यह संजीव का लघु उपन्यास है। पंच पहाड का क्षेत्र इस उपन्यास की कथा केन्द्र है। जहां से झारखंड ओंदोलन की शुरूवात हुई थी। इस उपन्यास में बढते शहरीकरण के कारण आदिवासीयों को विस्थापित करने के लिए मजबुर किया। उपन्यास का प्रमुख पात्र सुदिप्त है। वह आदर्शवादि है। वह आदिवासीयों की परिस्थिति को बदलना चाहता है, उसके लिए वह मेहनत करता है। उपन्यासकार का मूल दृष्टिकोण झाररखंड के आंदोलन को उदघाटित करना है। लेखक का कथन भी संयुक्तिक है -" इतने बडे आंदोलन का हश्र क्षेत्रिय अस्मिता में सिकुड गया है-ठीक अपने देश की आजादी की तरह सारी चीजें बौनी होती जा रहीं है। इन्हीं पर क्या इल्जाम दें जबकी मार्क्सवाद और जनवाद के नाम पर सत्ता सुख भोगनेवाले भी स्वार्थी, संकीर्ण और गद्दीपर काबीज रहने की राजनीति तक महदूद हो गए है।सर्वत्र तख्त तक पहुँचने की धक्कमपेल है।"[2] इस कथन में स्वतंत्र भारत की राजनीति का यथार्थ चित्रण है।

जहाँ बाँस फूलते हैं (1997) : श्री प्रकाश मिश्र रचित जहाँ बाँस फूलते है उपन्यास में आदिवासी लुशेइयों की जीवन पध्दती उनके रीति-रिवाजों, परम्पराओं, रुढियों, आदर्शों का रेखांकित किया है | लुशेइयों की समस्याओं को उनके जीवन संदर्भो के बीच से उभार कर और जन तथा सरकार दोनों के दृष्टिकोण को सामने रखकर एक बडी जरुरत, एक बडी माँग को पूर किया है | उन्होंने इस समस्या का कोई हल नहीं प्रस्तुत किया है | किन्तु उन्होंने जो इसकी आंतरिक यात्रा प्रस्तुत की है, पहचान और झाँकी प्रस्तुत की है वह हमें बैलोस सच्चइयों के रु-ब-रु खडा कर देता है | वहाँ का तथ्यपरक जीवन और दास्तान इस तरह से प्रस्तुत हुआ है कि इससे गुजरते हुए आप

Copyright©authors

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-09
June-2020

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

वहाँ की पहाडियों की ऊँचाई, कंटकों का तीखापन, नदी का बहाव, आसमान की चमक, भूख से ऐंठते आदमी का रंग, बूटों की आवाज, शिकारी की चालाकी, हवा की छुअन, धूप की गर्मी अपनी नस-नस में महसूस करेंगे और पायेंगे कि इस तरह उन्होंने हिंन्दी साहित्य और उसके माध्यम से भारतीय आदिवासी अस्मिता को रेखांकित किया है |

काला पहाड (1999) : भगवानदास मोरवाल का सन 1999 में प्रकाशित 'काला पहाड' उपन्यास है। मेवात हरियाना का एक पिछडा गांव है। उपन्यास के सभी पात्र इसी गांव से आते है। देश में बढती हुई सांप्रदायिकता पर गहरी संवेदनाओं को व्यक्त करने वाला आदिवासी जीवन केन्द्रित केन्द्रित उपन्यास है | स्वार्थी राजनेता सत्ता, संपति पाने के लिए किस सीमा तक गिर सकते हैं इसका बेबाक चित्रण है | सामान्य लोगों को मोहरा बनाकर उनसे राजनीतिक शतरंज खेलते है | आम आदमी ही सांप्रदायिक दंगो में अनान्वित अत्याचारों के ग्रास बनता है | इस कथ्य की कर्मभूमि है हरियाणा, उत्तरप्रदेश और राजस्थान की सीमा पर स्थित मेवात, जहाँ इस्लाम धर्मी आदिवासी मेव नाम की अल्पसंख्याक हिंन्दूओं के साथ शांति और सद्भावना के साथ वह जाति अपनी जिन्दगी बिताती है | पर कुछ स्वार्थी लोग सांप्रदायिकता का जहर घोल देते है | सदशक्ति की की पराजय होती है | काला पहाड की कथा आँचल विशेष की होने पर भी अपनी मूल प्रकृति में पूरे देश का प्रतिनिधित्व करती है | ग्रामीण अर्थ व्यवस्था का टूटना, मानवीय स्नेह सौहार्द का क्षय समूचे देश का कटु सत्य है | मेवाती बोली के सार्थक प्रवाही प्रयोग के कारण 'काला पहाड' उपन्यास अछुते मेवाती समाज का प्रामाणिक दस्तावेज बन गया है।इस संदर्भ मे राष्ट्रिय सहारा में लिखा है- "भाषा के स्तर पर मोनवाल ने पात्रों के अनुकूल क्षेत्रिय बोली को प्रधानता दी है।" मेवाती बोली के सार्थक प्रयोग से ही उपन्यास इतना चर्चीत तथा लोकप्रिय हुआ है। मेवाती बोली के ऐसे शेकडों शब्दों का प्रयोग अत्यंत स्वाभाविक रूप से किया गया है। इस संदर्भ में डॉ. सुधीर पचौरी लिखते है " यहाँ आकर हमें मेवाती के कम से कम सौ सवा सौ नए शब्द मिलेंगे जो ब्रज और राजस्थानी में पहले चलन में थे अब नागर हिन्दी में नहीं चलते।"[3]

जंगल जहाँ शुरु होता है (2000) : नवें दशक के बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न उपन्यासकार सजीव जी का जंगल जहाँ शुरु होता है उपन्यास आदिवासी धारु जाति और डाकुओं एवं राजनीतिज्ञों के आपसी लडाई को प्रदर्शित करता है | उपन्यास संकेत करता है कि जंगल हर मनुष्य में पनपता रहता है जिससे हमारा अक्सर सामना होता रहता है | भारत नेपाल की सीमा में स्थित चंपारण्य जिले के मिनी चंबल नाम से कलंकित क्षेत्र के आदिवासी धारु जाति का संघर्षमय जीवन यहाँ उकेरा

Copyright©authors

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI
ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-09
June-2020

गया है | वहाँ स्थित आदिवासीयों को बार-बार डाकुओं से लडना होता है | प्रशासन, समाज विरोधी तत्त्व, राजनेता, पुलिस आदि से डाकुओं को पोषित किया जाता है | गहन चिंतन-मंथन से यह कचोटने वाला तथ्य रेखांकित करते है कि अपराधी मनोवृत्ति रक्तगत वंशगत नहीं होती अपितु तथाकथित सभ्य सफेद पोश राजनेता, पुलिस अधिकारियों के सम्मिलित जुल्म शोषण ही अपराधी तत्त्वों के निर्माता हैं | वे डाकुओं से भी गये गुजरे होते हैं |

अल्मा कबूतरी (2000 ई.) : अल्मा कबूतरी यायावर कबूतरा आदिवासी जीवन को केंन्द्र में रखकर लिखा गया मैत्रेयी पुष्पा का सशक्त उपन्यास है | जिसका प्रकाशन इ.स.2000 में राजकमल प्रकाशन, दिल्ली से हुआ | प्रस्तुत उपन्यास अठ्ठारह अध्यायों में विभाजित है | उपन्यास की कथाभूमि में बुन्देलखंड की कबूतरा नामक आदिवासी जाति है जो अपना संबंध जौहर के लिए किंवंदती बन चुकी रानी पद्मिनी से जोडती है तथा पौराणिक युग तक छलांग लगाकर महादेव शिव के समाज में शामिल हो जाती है | यह जाति आज भी समाज के वृत्त पर डेरा डालकर जीती है | खूटे उखाडे और पुनः गाडे जाते है किन्तु वृत्त के भीतर नहीं परिधि की रेखा से सटे या उससे बाहर | उपन्यास में प्रमुखतः दो समाजों को चित्रित किया गया है | पहला आदिवासी कबूतरा समाज, दूसरा सभ्य समाज जिसे कबूतरा जाति के लोग अपनी भाषा में कज्जा कहते है | आदिवासी कबूतरा जाति के प्रतिनिधी पात्रों में कदमबाई, भूरी, अल्मा, राणा, रामसिंह, सरमन, दूलन आदि है | सभ्य समाज के प्रतिनिधि पात्रों में मंसाराम, जोधा, कैहर सिंह, राणा, धीरज सूरजभान, श्री रामशास्त्री आदि है |

'ग्लोबल गाँव देवता' (2009) रणेन्द्र द्वारा रचित इस उपन्यास में आदिवासीयों के जीवन का का संतस सरांश प्रस्तुत किया है। शताब्दियों से संस्कृति और सभ्यता का पता नही किस छत्री से छनकर अवशिष्ट के रूप में जीवित रहनेवाले असुर समुदाय की गाथा पूरी प्रामाणिकता व संवेदनशिलता के साथ प्रस्तुत किया है। देवराज इंद्र से लेकर ग्लोबल गाँव के व्यापारीयों तक फैली शोषण की प्रक्रिया को उजागर किया गया है। असुर जनजाति को मानव सभ्यता के विकास क्रम में हाशिये पर धकेल दिए जाने और उनको मिटाने की साजिस किस प्रकार की जाती है, उसका चित्रण इस उपन्यास में किया गया है। इस उपन्यास को भारतीय ज्ञानपीठ से 2009 में प्रकाशित किया गया है। अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए आदिवासी शांति से अनशन चलाते है। पर उन्हे पुलिस द्वारा भडकाकर गोली चलाई जाति है। इसमें कुच्छ लोगों की हत्या होने के कारण इसे नक्सलि कांड की सज़ा दी जाती है। अंत में लेखक लिखते है कि "जो लढाई वैदिक युग से शरू

Copyright©authors

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI
ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-09
June-2020

हुई थी, हजार-हजार इंद्र जिसे अंजाम नहीं दे सके थे, ग्लोबल गाँव के देवताओं ने वह मुकाम पा लिया था।"[4]

हिन्दी के आदिवासी जीवन संबंधी उपन्यासकारों ने समसामायिक हिंदी भाषा भारतीय ग्रामीण एवं आदिवासी समाज के विविध पक्षों को अपनी लेखनी से साहित्य में प्रतिबिम्बित कर उनके वर्तमान जीवन के सांस्कृतिक इतिहास का निर्माण कार्य किया है | इन उपन्यासकारों ने अपने परिवेश की जनता की आस्थाओं, जीवन पध्दतियों, कार्य प्रणालीयों, संस्थाओं, वैचारिक संगतियों एवं विसंगतियों मान्यताओं एवं लोक संस्कृति आदि की मृतिका से अपने साहित्य का निर्माण कर उसे आगामी मानवता के लिए वर्तमान, ग्रामीण एवं आदिवासी जनता के जीवन का स्मारक स्तम्भ बना दिया है | आज के इस दौर में जनपदीय भाषाओं में आदिवासी जीवन केंन्द्रित उपन्यासों का अत्याधिक महत्व है |

निष्कर्ष : आदिवासी समाज पहाडींयों और जंगलों में रहने के कारण वह आज भी पिछडा हुआ नजर आता है। अज्ञान और अशिक्षा के कारण अपनी रूढी और परम्पराओं के चंगुल से बाहर नहीं आ पाई है। हिन्दी उपन्यासों में आदवासी विमर्श आदिवासी जीवन की व्यथा कथा अलग अलग समस्याएँ के रूप में चित्रित हुआ है। इस चित्रण में आदिवासी जीवन से जुडी समस्याएँ, संघर्ष, स्वतंत्रता, स्वावलंबन, आस्मिता, संस्कृति आदि आदिवासी विमर्श के कई तथ्य सामने आते है।

संदर्भ सूची -

1. जाधव वंदन, रामदरशमिश्र के उपन्यासों मे ग्रामीण परिवेश, गोरवाणी प्रकाशन, औरंगाबाद, प्र. सं. 2010, पृ. 11

2. संजीव, पाँव तले की दूब, रामकल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 1995, पृ. 81

3. हंस, पत्रिका, दिसंबर 1999 पृ. 86

4. रणेन्द्र, ग्लोबल गाँव देवता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 2009, पृ.100

T. C.
Assistant Professor
Shivaji College,Hingoli.
Tq.& Dist.Hingoli (MS.)

Copyright©authors

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli